D/(41)/S
P-I

(3)

सिन्धु सभ्यता का विस्तार

सिन्धु सभ्यता के अवशेष विस्तृत भू-भाग में टीलों के रूप में पाये गये हैं। ये टीले नगर और ग्राम दोनों प्रकार के स्थलों के परिचायक हैं। एक पुरैतिहासिक संस्कृति के महान केन्द्र के रूप में हड़प्पा की खोज रायबहादुर दयाराम साहनी ने सन 1921 ई० में और मोहनजोदड़ो की राखालदास बनर्जी ने 1922 ई० में की और ऑरल स्टाइन के द्वारा बलूचिस्तान एवं गेड्रोशिया क्षेत्र में किये गये सर्वेक्षणों और सीमित उत्खननों से सिन्धु सभ्यता के अनेक स्थलों का पता लगा। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व मुख्यतः सिन्धु और उसकी सहायक नदियों के समीपवर्ती क्षेत्र में पाये गये सिन्धु सभ्यता के स्थलों की ही जानकारी थी। ~~स्वतंत्रता~~ 1947 ई० में भारत के विभाजन के बाद भारतीय क्षेत्र में कई अन्य महत्वपूर्ण स्थान यथा लोथल, रोपड़, कालीबंगा आदि का पता लगा है। उधर पाकिस्तान में भी कुछ नये स्थल मिले जिनमें मोहेंजोदड़ो से लगभग 30 मील की दूरी पर स्थित कोटदीजी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। पुरातात्विक खोजों तथा उत्खननों से स्पष्ट हो गया है कि इस सभ्यता का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत था।

कुछ समय पूर्व तक इस सभ्यता की उत्तरी सीमा रोपड़ (पंजाब) थी। अब सुलेमान पर्वत के पूर्वी पाद के गोमलघाटी में विद्वानों ने कई स्थल खोजे हैं जिनमें गुमला विशेष महत्वपूर्ण है। तक्षशिला के पास में सराय खोला नामक स्थान मिला है। नर्मदा नदी की घाटी में मेघम, तेलोद और भगत्राव और उससे भी दक्षिण में ताप्ती नदी की निचली घाटी में मालवण (जिला सूरत) नामक स्थान है। ये तीनों -

P.T.O

ही स्थल समुद्र के निकट है और व्यापारिक महत्व के रहे होंगे। पूर्व में यमुना के सहायक हिण्डन नदी के किनारे आलमगीरपुर (जिला मेरठ उत्तरप्रदेश) और इससे भी पूर्व तथा पश्चिम में मकरान के समुद्री तट पर कराची से 300 मील पश्चिम में स्थित सुत्कगेनडोर तक विस्तृत है। उत्तर में गबरकोट सिन्धु सभ्यता का महत्वपूर्ण स्थल है। यद्यपि कुछ विद्वानों ने यह सम्भावना व्यक्त की है कि सिंधु सभ्यता का विस्तार कौशाम्बी और उससे भी पूर्व तक रहा हो, तथापि पुष्ट प्रमाणों के अभाव में निश्चयपूर्वक कहना कठिन है। कुछ पुरातत्वविदों की धारणा है कि गंगा की घाटी में विस्तृत पुरातात्विक सर्वेक्षण से न केवल इस क्षेत्र में सिन्धु सभ्यता के प्रसार पर भी प्रकाश पड़ेगा अपितु उससे सिन्धु सभ्यता और गंगाघाटी की सभ्यता के मध्य की कड़ी को भी जोड़ा जा सकेगा। उपलब्ध साक्ष्य के आधार पर कुछ समय पूर्व रंगनाथ राव ने इस सभ्यता के क्षेत्र का विस्तार लगभग 1600 किलोमीटर पूर्व से पश्चिम और 1100 किलोमीटर से अधिक उत्तर से दक्षिण में आंका था अब उत्तर में सराय खोला नामक स्थल का ज्ञान होने पर उसकी दक्षिणी सीमा और अधिक विस्तृत हो गयी है। इस विस्तृत भू-भाग में कुछ स्थल विशाल नगर (हड़प्पा, मोहनजोदड़ो), कुछ कस्बे (लोथल) कुछ ग्राम (आलमगीरपुर) थे। लोथल समुद्री व्यापार का केन्द्र रहा होगा। हाल ही के तुर्कमेनिया क्षेत्र के उत्खनन से स्पष्ट हो गया है कि सिन्धु सभ्यता का मध्य एशिया के साथ भी सम्पर्क था।

P.T.O

Scanned with CamScanner

सिन्धु सभ्यता का विस्तार प्राचीन मेसोपोटामिया, मिश्र तथा फारस की सभ्यताओं के मेल से कहीं अधिक था।

फैमरसर्विस का कहना है कि सिन्धु सभ्यता का विस्तार मुख्य रूप से गेहूँ उपजाने वाले क्षेत्र - सिंध पंजाब और गुजरात में हुआ। दिल्ली के पूर्ववर्ती क्षेत्र एवं ताप्ती नदी के दक्षिण में चावल की उपज मुख्य रूप से होती है। इससे ऐसा लगता है कि सिन्धु वासियों ने ऐसे स्थलों को ही चुना जो गेहूँ उपजाने के लिए उपयुक्त है। यद्यपि सिन्धु सभ्यता के कुछ थोड़े से स्थल पर्वतीय क्षेत्र में भी पाये गये है। इस सभ्यता के स्थल मैदानी क्षेत्र में ही है, जो निश्चय ही एक महान सभ्यता के विकास के लिए अपेक्षाकृत अधिक उपयुक्त वातावरण उपलब्ध करते है। साथ ही इस सभ्यता के पास लगभग तेरह सौ किलोमीटर का समुद्रतट था जो समुद्री व्यापार के लिए उपयुक्त सुविधाएं प्रदान करता था।

Next — सिन्धु सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थलों का विवरण।